दस ग़ज़लें
गंगा धर शर्मा 'हिन्दुस्तान'

गज़ल

चाँद बोला चाँदनी, चौथा पहर होने को है.
चल समेटें बिस्तरे वक्ते सहर होने को है.
चल यहाँ से दूर चलते हैं सनम माहे-जबीं.
इस जमीं पर अब न अपना तो गुजर होने को है.
गर सियासत ने न समझा दर्द जनता का तो फिर.
हाथ में हर एक के तेगो-तबर होने को है.
जो निहायत ही मलाहत से फ़साहत जानता.
ना सराहत की उसे कोई कसर होने को है.
है शिकायत , कीजिये लेकिन हिदायत है सुनो.
जो कबाहत की किसी ने तो खतर होने को है.
पा निजामत की नियामत जो सखावत छोड़ दे.
वो मलामत ओ बगावत की नजर होने को है.
शान 'हिन्दुस्तान' की कोई मिटा सकता नहीं.
सरफ़रोशों की न जब कोई कसर होने को है.

गंगा धर शर्मा 'हिन्दुस्तान'
472 बी. के. कौल नगर
अजमेर (राज.)

ग़ज़ल

आज तिरंगे को देखा तो जख़्म पुराने याद आये
जलियाँ वाला याद आया तोपों के निशाने याद आये

हर और तबाही बरपा थी जुल्म ढहाया जाता था
हुस्न के हाथों आशिक के ख़्वाब मिटाने याद आये
अपने पीछे दौड़ रहे उस बालक को जब देखा तो
तुम याद आये और तुम्हारे साथ ज़माने याद आये
फूटी कौड़ी भी ना दूँगा जब भी कोई कहता है
कौरव-पांडव वाले तब ही सब अफ़साने याद आये
टपटप टपके थे आँसू तब 'हिन्दोस्ताँ ' की आँखों से
अपनों के हाथों अपनों के क़त्ल कराने याद आये

गंगा धर शर्मा 'हिन्दुस्तान'
472 बी. के. कौल नगर
अजमेर (राज.)

ग़ज़ल

मक्कार चोर धूर्त तथा बदचलन तमाम ।
क्यों कर न कीजिये अब जेरे कफ़न तमाम।।

दाढ़ी बचा रही क़िबला अंजुमन तमाम।
हाथों में थाम उस्तरे फिरते बुजन तमाम।।

घोड़ा खड़ा हुआ है हुजूर देखिये जनाब।
कस-कर के जीन बैठ गये हैं विजन तमाम।।

पागल हो बादशाह वजीरों की क्या मजाल।
खामोश ताकता हाँ बेचारा वतन तमाम।।

सूरत बड़ी भयानक आँखें थी ख़ौफ़नाक।
बेहोश इक नज़र में हुई अंजुमन तमाम।।

'हिन्दोस्ताँ' के नाम से जाना मैं जाऊँगा।
लिख्खा है भाग में मेरे सुन ले वतन तमाम।।

गंगा धर शर्मा 'हिन्दुस्तान'
472 बी. के. कौल नगर
अजमेर (राज.)

गज़ल

शमशीर हाथ में हो ओ तमाम तक न पहूंचे ।
बुजदिल बड़ी सियासत जो नियाम तक न पहूंचे।।
सतसंग की परीक्षा जिस ने भी पास कर ली ।
मुमकिन नहीं कि फिर वो घनश्याम तक न पहुंचे।।
शिकवा करूँ मैं कैसे कि जवाब क्यों न आया।
गुमनाम सारे खत थे गुलफाम तक न पहूंचे ।।
अब रोक दे ओ मालिक सब गर्दिशें खला की ।
ये सहर भी रफ्ता रफ्ता कहीं शाम तक न पहुंचे ।।
जब ओखली में पूरा सर ही फंसा दिया तो ।
मुगदर से क्यों कहें कि अंजाम तक न पहूंचे ।।
'हिन्दोस्तां' भी या रब कब तक बचा सकेगा ।
जो ये तार तार खेमे ख़य्याम तक न पहुंचे ।।

गंगा धर शर्मा 'हिन्दुस्तान'
472 बी. के. कौल नगर
अजमेर (राज.)

गजल

बज़्म में गीत गाता हुआ कौन है.
लूटता यूँ दिलों को भला कौन है.

कह रहे हैं परम-आत्मा कौन है.
देखना भाइयों जा-ब-जा कौन है.

सोचिये आसमाँ को करीबे उफ़क.
इस जमीं की तरफ खींचता कौन है .

देखना सिर्फ है सर उठे हैं कई.
जुल्म की बन्दिशें तोड़ता कौन है.

राज-रावण में सच बात पर लात है.
खींच लीजे जुबाँ , बोलता कौन है.

उर्वरा हो जमीं उसपे बादल घना.
बीज है फूटता, रोकता कौन है.

खानदानी है जो ऊंचे कुल से जुड़ा.
मुफलिसी में है वो , मानता कौन है.

हुक्मरानों बिना दहशती में भला.
तालिबे इल्म को ठेलता कौन है.

क़त्ल के बाद मुर्दा फक़त लाश है.
नाम दे के दलित बेचता कौन है.

जो खिलौने मिले तो उछलता हुआ .
फूल सा मुस्कुराता हुआ कौन है.

देखिये ये सियासत की जादूगरी.
कर रहा कौन है , झेलता कौन है.

गोर में सो रहा हूँ बड़ा फ़ैल कर
हूँ मैं वाहिद यहाँ ,दूसरा कौन है

देख हिन्दोस्तान आप ही से कहे
है सभी तो मेरे अलहदा कौन है

गंगा धर शर्मा 'हिन्दुस्तान'
472 बी. के. कौल नगर, अजमेर (राज.)

गज़ल

ये मस्त हुश्न तेरा ,कोई जलजला ही लगे.
मुझको तो आशिकों की , अब क़ज़ा ही लगे.

कि बढ़ रहा है दमा और घुट रही साँस भी
दवा बेअसर, दुआ किजिए कि दुआ ही लगे

किसने किया था सौदा, अस्मत का देश की
गुलामी कि वजह कौन थे, सच पता ही लगे

बैसाखियाँ किसी को चलना, सिखाती नहीं
है चला रहा जो सबको , वो होंसला ही लगे

'हिन्दुस्तान' को देखे तो कहे दुनिया बरबस
कामयाबियों का ये कोई सिलसिला ही लगे

गंगा धर शर्मा 'हिन्दुस्तान'
472 बी. के. कौल नगर
अजमेर (राज.)

गज़ल

जो जहाँ भी जहाँ से उठता है .
तो ज़नाजा वहाँ से उठता है .

बात पूरी नहीं करी तो फिर.
अक्द तेरी जबां से उठता है.

आब ही तो है जान मोती की .
भाव उसका वहाँ से उठता है.

कश्तियाँ डूब डूब जाती हैं.
यह बवंडर कहाँ से उठता है .

बस्तियां खाक ही न हो जाये.
ये धुँआ सा कहाँ से उठता है.

आग से खेलता भला क्यां है.
ये पतंगा कहाँ से उठता है.

इल्म तो 'हिन्दुस्तान' से आया .
शोर सारे जहाँ से उठता है.

गंगा धर शर्मा 'हिन्दुस्तान'
472 बी. के. कौल नगर
अजमेर (राज.)

गज़ल

चाहे तो पीर -पयंबर-कि कलंदर देखो
मौत से छूट सके ना, कि सिकंदर देखो
.
ये कातिल नर्म बाहें हैं हमारे यार की
सिमट के इनमें खुद ही न जाए मर देखो.
.
दीखता है अँधेरा ही अँधेरा हर तरफ
जुल्फ-ए- यार लगता गई बिखर देखो
.
कोई ताकत यकीन से बढ़कर नहीं होती
है अगर यकीं तो तैरा के पत्थर देखो
..
राम को राह नहीं देकर के क्या मिला
पानी पानी हुआ जाता है समंदर देखो
.
'हिन्दुस्तान' का लिक्खा तारीख ही समझो
लिख के नहीं मिटाता कभी अक्षर देखो

गंगा धर शर्मा 'हिन्दुस्तान'
472 बी. के. कौल नगर
अजमेर (राज.)

ग़ज़ल

गले में झूलते बाँहों के नर्म हार की बात।
ये बात है मेरे मौला हसीं हिसार की बात।

रखोगे आग पे माखन तो वो पिघल ही जायेगा।
भला टली है कभी , है ये होनहार की बात।

ये इंकलाब की बातें है जोश वालों की।
कहीं पढ़ी थी जो मैंने वो बुर्दबार की बात।

कहूँ किसी से भला क्यों , छुपा के रखे हैं।
उन्हीं की आँखों के किस्से उन्ही के प्यार की बात।

बड़ी कठिन है ये शेरो-सुखन नवाजी जनाब।
बेइख़्तियार से हालात , क़ि बारदार की बात।

ख़याल ही जब हिन्दोस्ताँ का हो न तो फिर।
फरेब हैं सब , धोखा है बागदार की बात।

गंगा धर शर्मा 'हिन्दुस्तान'
472 बी. के. कौल नगर
अजमेर (राज.)